بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-21.07.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के वृत्तांत व घटनाओं का बयान।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 21 जौलाई 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- बदर की लड़ाई समाप्त होने के पश्चात बन्दी बनाए हुए लोगों से आँहज़रत स. के सद्व्यवहार के बारे में तबक़ात इब्ने सअद में उल्लिखित है कि जब बदर के क़ैदी आए तो उनमें आप स. के चाचा हज़रत अब्बास रज़ीयल्लाहु अन्हु भी थे, आप स. उस रात जागते रहे तो सहाबा रज़ी. में से किसी ने पूछा कि- ऐ अल्लाह के नबी स.! आप स. को किस बात ने जगाए रखा है? फ़रमाया- अब्बास के कराहने की आवाज़ ने, तो एक व्यक्ति गया और उसने आप रज़ी. के बन्धन ढीले कर दिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- क्या बात है मैं अब्बास के हाय हाय करने की आवाज़ नहीं सुन रहा, तो एक व्यक्ति ने कहा कि उसने आप रज़ी. के बन्धन कुछ ढीले कर दिए हैं। आप स. ने फ़रमाया- फिर सारे बन्दियों के साथ ऐसा ही करो।

सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने लिखा है कि आँहज़रत स. ने मुसलमानों को आदेश दिया कि क़ैदियों के साथ प्यार एवं स्नेह का व्यवहार करें और उनकी सुविधाओं का ध्यान रखें। सहाबा रज़ी. ने, जिनको अपने आक़ा स. की हर एक इच्छा के पूरा करने का इश्क़ था, आप स. की इस नसीहत पर इतनी सहजता के साथ अमल किया कि दुनिया के इतिहास में उसका उदाहरण नहीं मिलता।

सर विलयम मयूर ने क़ैदियों के साथ इस स्नेह पूर्ण व्यवहार को निम्नलिखित शब्दों में स्वीकार किया है-

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के निर्देशानुसार अन्सार एवं मुहाजिरों ने काफ़िर बन्दियों के साथ अति प्रेम एवं सहानुभूति का व्यवहार किया। अतः कुछ क़ैदियों की अपनी गवाही इतिहास में इन शब्दों में

वर्णित है कि ख़ुदा भला करे मदीने वालों का, वे हमको सवार करते तथा स्वयं पैदल चलते, हमको गेहूँ की पक्की हुई रोटी देते और आप केवल खजूरें खा कर पड़े रहते। हमको यह ज्ञात होने के पश्चात चकित नहीं होना चाहिए कि कुछ क़ैदी इस सुन्दर व्यवहार के कारण मुसलमान हो गए और ऐसे लोगों को तुरन्त आज़ाद कर दिया गया, जो क़ैदी इस्लाम नहीं लाए उन पर भी इस सुन्दर व्यवहार का बड़ा अच्छा प्रभाव था।

बदर का युद्ध तथा उसके परिणाम के बारे में लिखा है कि जब बदर में विजय की सूचना लेकर अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. और ज़ैद बिन हारसा रज़ी. मदीने पहुंचे तो उनके मुंह से विजय की शुभ सूचना की घोषणा सुनकर अल्लाह का दुश्मन कअब बिन अशरफ़ यहूदी झुठलाने तथा कहने लगा कि यदि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इन बड़े बड़े सरदारों को मार डाला है तो धरती की पीठ पर रहने से अच्छा है कि धरती के नीचे रहा जाए (अर्थात जीवित रहने से मरना अच्छा है)

मौलाना शिबली नुअमानी अपनी किताब में बदर के परिणामों को बयान करते हुए लिखते हैं कि बदर के अभियान ने धार्मिक एवं राजनैतिक स्थिति पर कई दशाओं से गहरा प्रभाव डाला तथा वास्तव में यह इस्लाम की उन्नति का प्रथम चरण था। क़ुरैश के समस्त बड़े बड़े सरदार जिनमें से एक एक इस्लाम की प्रगति के मार्ग में लोहे क समान रुकावट बन कर खड़ा था, नष्ट हो गए।

उतबा तथा अबू जहल की मौत ने कुरैश के शासन का ताज अबू सुफ़यान के सिर पर रखा जिससे बनू उमय्या का राज्य शुरु हुआ परन्तु क़ुरैश की मूल शक्ति का स्तर घट गया। मदीने में अब तक अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल स्पष्ट काफ़िर था परन्तु अब प्रत्यक्षतः वह इस्लाम की परिधि में आ गया, यद्यपि पूरे जीवन वह पाखंडी रहा तथा उसी अवस्था में प्राण दिए। इस स्पष्ट विजय ने काफ़िरों में ईर्ष्या की आग बढ़ा दी और वे उसको सहन न कर सके। क़ुरैश को पहले केवल हज़र्मी का रोना था, बदर के बाद हर घर शोक का स्थल था, तथा बदर के मृतकों का बदला लेने के लिए मक्के का बच्चा बच्चा व्याकुल था। अतः सुवेक़ की घटना और ओहद की लड़ाई का अभियान इसी जोश को प्रकट करता है।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि बदर के युद्ध का प्रभाव काफ़िर तथा मुसलमान दोनों के लिए अत्यंत गहरा तथा दूरगामी हुआ और इसी लिए इतिहास में इस युद्ध को विशेष महत्त्व प्राप्त है, यहाँ तक कि क़ुर्आन शरीफ़ में इस युद्ध का नाम यौमुल फ़ुर्क़ान रखा गया है अर्थात वह दिन जबकि इस्लाम एवं कुफ्र में खुला खुला फ़ैसला हो गया। निःसन्देह बदर की लड़ाई के बाद भी क़ुरैश एवं मुसलमानों की परस्पर तथा अनेक भीषण लड़ाईयाँ हुईं और मुसलमानों पर अति कठिनाई पूर्ण अवसर भी आए परन्तु बदर के युद्ध में मक्का के काफ़िरों की रीढ़ की हड्डी टूट चुकी थी जिसे बाद का कोई ऑप्रेशन स्थाई रूप से ठीक नहीं कर सका। मृतकों की संख्या की दृष्टि से निश्चित ही यह कोई बड़ी हार नहीं थी। क़ुरैश जैसी जाति में सत्तर बहत्तर सैनिकों का मारा जाना कदाचित जातीय विनाश नहीं कहला सकता। फिर वह क्या बात थी कि बदर का युद्ध यौम्ल फ़ुर्क़ान कहलाया? इस सवाल के जवाब में सुन्दरतम शब्द वे हैं जो क़ुर्आन शरीफ़ ने बयान फ़रमाए, और वे ये हैं يَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ वास्तव में इस दिन काफ़िरों की जड़ कट गई, अर्थात बदर के युद्ध का वार काफ़िरों की जड़ पर पड़ा तथा वह दो टुकड़े हो गई।

बदर में वास्तव में काफ़िरों की जड़ कट गई। उतबा तथा शीबा और उमय्या बिन ख़लफ़ और उक़बा बिन अबी मुअीत तथा नज़र बिन हारिस इत्यादि क़ुरैश के राष्ट्रीय जीवन की मूल आत्मा थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी इस बारे में लिखा है कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानों पर इसके बाद भी अत्याचार होते रहे तथा उन्हें काफ़िरों से लड़ाईयाँ लड़नी पड़ीं परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि बदर के युद्ध ने काफ़िरों की शक्ति को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया था और मुसलमानों की प्रतिष्ठा उन पर प्रकट हो गई थी। बदर का युद्ध जिसे क़ुर्आन करीम ने फ़ुर्क़ान घोषित किया, इसके विषय में बाईबिल में भी भविष्य वाणी पाई जाती है। इसी प्रकार क़ुर्आन करीम ने एक ग्यारह्वीं रात की सूचना देकर यह पेशगोई की थी कि हिजरत के पूरे एक साल बाद काफ़िरों की पूरी शक्ति टूट जाएगी और मुसलमानों के लिए विजय एवं सफ़लता का सवेरा प्रकट हो जाएगा। अतः ठीक एक साल बाद बदर की लड़ाई हुई जिसमें काफ़िरों के बड़े बड़े लीडर मारे गए और मुसलमानों को उन पर स्पष्ट रूप में ग़ल्बः मिल गया।

बदरी सहाबा रज़ी. के महत्त्व एवं प्रतिष्ठा का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि आँहज़रत स. ने इस उम्मत में आने वाले मेहदी की एक निशानी यह फ़रमाई कि उसके पास भी एक किताब होगी जिसमें उसके पास बदर के सहाबियों की संख्या के अनुसार 313 सहाबियों के नाम होंगे।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़रमाते हैं कि चूँकि सही हदीस में आ चुका है कि महदो मअहूद के पास एक छपी हुई किताब होगी जिसमें उसके 313 सहाबियों के नाम लिखे होंगे इस लिए यह बयान करना आवश्यक है कि वह पेशगोई आज पूरी हो गई। यह तो सत्य है कि पहले इससे उम्मते मरहूमा में कोई ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं हुआ कि जो मेहदविय्यत का दावेदार होता और उसके समय में छापा ख़ाना (प्रिन्टिंग प्रेस) भी होता तथा उसके पास एक किताब भी होती जिसमें 313 नाम लिखे हुए होते और ज़ाहिर है कि यदि यह काम इंसान के वश में होता तो इससे पहले कई झूठे अपने आपको इसका अधिकारी बना सकते।

शेख़ अली हमज़ा बिन अली मलक अलतूसी अपनी किताब जवाहिरुल इसरार में मसीह मौऊद के बारे में लिखते हैं-

मेहदी उस गाँव से निकलेगा जिसका नाम कदअः है और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा उस मेहदी की पुष्टि करेगा तथा दूर दूर से उसके दोस्त जमा करेगा जिनकी गणना बदर के युद्ध में सम्मिलित लोगों की गणना के बराबर होगी अर्थात तीन सौ तेरा होंगे तथा उनके नाम उनके निवास एवं विशेषताओं सहित एक छपी हुई किताब में लिखे होंगे।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

अब ज़ाहिर है कि पहले इससे कि किसी व्यक्ति को संयोग नहीं हुआ कि वह मेहदी मअहूद होने का दावा करे और उसके पास छपी हुई किताब हो, जिसमें उसके दोस्तों के नाम हों, परन्तु मैं पहले इससे भी आईनाए कमालाते इस्लाम में तीन सौ तेरा नाम लिख चुका हूँ और अब दोबारा प्रमाणों की सार्थकता के लिए तीन सौ तेरा नाम नीचे (रिसाला अंजामे आथम) में लिखता हूँ।

चौधवीं शताब्दी वही शताब्दी है जिसके लिए महिलाएँ तक कहती थीं कि चौधवी शताब्दी बरकत एवं भलाई के रूप में आएगी। ख़ुदा की बातें पूरी हुईं और चौधवीं शताब्दी में अल्लाह तआला की इच्छानुसार इस्मे

अहमद प्रकट हुआ, और वह मैं हूँ जिसकी ओर इस बदर की घटना में पेशगोई थी, जिसके लिए रसूलुल्लाह स. ने सलाम कहा, परन्तु खेद है कि जब वह दिन आया और चौधवीं का चाँद निकला तो दूकानदार एवं स्वार्थी कहा गया। खेद है उन पर जिन्होंने देखा और न देखा, समय पाया एवं न पहचाना, वे मर गए जो मिम्बरों पर चढ़ चढ़ कर रोया करते थे कि चौधवी शताब्दी में यह होगा, और वे रह गए जो कि अब मिम्बरों पर चढ़ कर कहते हैं कि जो आया है वह झूठा है, इनको क्या हो गया है, यह क्यूँ नहीं देखते और क्यूँ नहीं सोचते।

तत्पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने 17 फ़रवरी 1904 की डायरी में उल्लिखित हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के इलहाम कि बदर के युद्ध की घटना मत भूलो के विषय में फ़रमाया कि अल्लाह तआला हममें विशेष रूप से बदर के महत्त्व का बोध पैदा फ़रमाए और हम आँहज़रत स. के सच्चे सेवक के आगमन को समझने वाले हों, अल्लाह तआला करे कि मुस्लिम उम्मत भी इस बदर की घटना की वास्तविकता को समझे और आँहज़रत स. की ग़ुलामी में आए हुए मसीह मौऊद अलै. को पहचाने ताकि दोबारा मुसलमान अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के योग्य बन सकें।

दूसरे ख़ुत्बः से पहले हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने बयान फ़रमाया कि इन्शाअल्लाह तआला अगले जुम्अतुल मुबारक से अहमदिया यू के जमाअत का जलसा सालाना शुरु हो रहा है। इस वर्ष तीन चार वर्षों के बाद बाहर से भी जलसा सालाना में शामिल होने के लिए मेहमान आएँगे बल्कि मेहमानों का आगमन शुरु हो चुका है। अल्लाह तआला इन सब यात्रा करने वालों की यात्राओं में सुविधा पैदा फ़रमाए तथा सुरक्षा के साथ यहाँ सब पहुंचें और जलसे के उद्देश्य से वास्तविक लाभ पाने वाले हों, इसी तरह यू के में रहने वाले दोस्त भी वास्तविक रूह एवं भावना के साथ जलसे में शामिल हों और केवल यह बात सम्मुख हो कि हमने जलसे के दिनों में रूहानी मायदा प्राप्त करने की चेष्टा करनी है।

आगे मुख्यतः हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने हर एक जलसे में शामिल होने वालों की हज़रत मसीह मौऊद अलै. के मेहमान समझ कर सवा करने के विषय में जलसे म ड्यूटियों पर नियुक्त किए गए कार्यकर्ताओं, विभिन्न विभागों तथा शामिल होने वालों पर आने वाले दायित्वों और मेहमानों की आवभगत के बारे में विभिन्न विस्तार पूर्वक नसीहतें करते हुए अन्त में निर्देश फ़रमाया कि हर एक को आँहज़रत स. के इस निर्देश का पालन करते रहना चाहिए कि सदैव मुस्कुराते रहो। अल्लाह तआला करे कि समस्त कार्यकर्ता सुन्दर रंग में ड्यूटियाँ पूरी करने वाले हों और जलसा हर एक दृष्टि से बरकत वाला हो, विशेषतः हर अहमदी को इस जलसे की सफलता के लिए दुआ करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ भी दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131